International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-12-2025, Accepted: 04-01-2026, Published: 19-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 33-35

अरुणाचल प्रदेश के हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता

ताबा याना
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिजोरम, भारत

सारांश
अरुणाचल प्रदेश में प्रमुख रूप से 26 जनजातियाँ और लगभग 100 उपजनजातियाँ हैं। इन सभी जनजातियों के अपने अलग–अलग संस्कृति–संस्कार है और बोलियाँ हैं। अरुणाचल प्रदेश की इन सभी जनजातियों को हिंदी भाषा एक ही सूत्र में बांधती है। भारत के अन्य राज्यों की तरह अरुणाचल प्रदेश में भी स्त्री की स्थिति को अच्छा नहीं कहा जा सकता। इन सभी जनजातियों में स्त्री की स्थिति भी अलग–अलग है; लेकिन किसी को बेहतर नहीं कहा जा सकता, हाँ कहीं बद तो कहीं बदतर जरूर कह सकते है। अरुणाचल प्रदेश आधारित हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य में भी यह बात परिलक्षित होती है। जहाँ अरुणाचल प्रदेश के हिंदी उपन्यास साहित्य में भी स्त्री की स्थिति को उद्घाटित किया गया है।
प्रस्तुत लेख में भी इसी विषय पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्दः स्त्री अस्मिता, विमर्श, शोषण, विद्रोह, संघर्ष, पितृसत्ता, अस्तित्व

प्रस्तावना

अरुणाचल प्रदेश हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न को उठाते हुए उपन्यासकारों ने कन्या मूल्य', 'सोनाम', 'जंगली फूल', 'उस रात की सुबह', 'मिनाम', 'मेरी आवाज़ सुनो', आदि उपन्यासों में स्त्री की पीडा, स्त्री की मुक्ति, स्त्री शोषण का विद्रोह, स्त्री के स्वप्न और संघर्ष, स्त्री के अस्तित्व आदि तमाम प्रसंग को बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'उस रात की सुबह' उपन्यास में यापी की माँ अपनी बेटी की मदद नहीं कर पाने का खेद जताती है, वो न पति का विरोध कर पाती है, न ही पुरुष प्रधान समाज के नियम, कानून और निर्णय का विरोध कर पाती है। वो अपनी बेटी यापी की पीड़ा पर मन ही मन रोती, बिलखती हुए रह जाती है। 'उस रात की सुबह' उपन्यास में यापी की माँ कहती है कि– "इस पुरुष प्रधान समाज में सारे नियम–कानून इन पुरुषों के द्वारा बनाए हुए हैं लेकिन उन नियमों का पालन करें सिर्फ स्त्रियाँ। सब कुछ अपने ही पक्ष में कर लिया इन मर्दों ने और अन्याय सहे स्त्रियाँ। सहती रहें पर उन अन्यायों के खिलाफ आवाज भी न उठाए। 'वाह रे! पुरुष प्रधान समाज! स्त्रियों पर जुल्म तों ऐसे कर रहे हो जैसे इनकी कोख से पैदा न होकर किसी आसमान से टपके हो।" एक माँ का दर्द और चीख इस पुरुष प्रधान समाज में दबकर रह जाती है, यापी की माँ उस समाज से खूब बगावत करना चाहती है, उस समाज को चीख–चीख कर बताना चाहती है कि मेरी बेटी के साथ अन्याय हो रहा है, मैं इस फैसले के खिलाफ हूँ, मगर यापी की माँ की आवाज इस पुरुष प्रधान समाज में घुटकर और दबकर रह जाती है, वह मन ही मन रोती हुए रह जाती है। यापी की माँ उस पुरुष प्रधान समाज से पूछती है कि– "बेटी कोई निरीह गाय नहीं होती जिसे कभी भी, कहीं भी किसी भी खूंटी से बाँध दिया जाए।"... "कितनी बेबस हूँ मैं, मेरी बेटी पर इतना बड़ा अन्याय भरा फैसला होने पर भी मैं कुछ नहीं कर पा रही हूँ। क्या इसी दिन के लिए मैंने दर्दनाक प्रसव पीड़ा सहकर अपनी बेटी को जन्म दिया था कि एक दिन ये सब समाज के ठेकेदार मिलकर उसकी जिंदगी का फैसला इस तरह अन्यायपूर्वक ढंग से करें, जैसे की वह कोई अपराधिनी हो?"? दरअसल वर्षों से पितृसत्तात्मक समाज में नारियों की कोई अहमियत नहीं थी, कभी नारी की इच्छा और चाह को जानने की कोशिश तो क्या कभी इस विषय पर चर्चा भी नहीं हुई। ऐसी ही दशा 'उस रात की सुबह' उपन्यास में दिखती है जहां यापी पात्र के साथ समाज के मुख्य लोग अन्याय करते हैं, इसी उपन्यास में उपन्यासकार ने दिखाया है कि पितृसत्तात्मक और पुरुष–प्रधान समाज की पंचायत में यापी नामक युवती का विवाह अधेड़ उम्र के तातो नामक पुरुष से तय कर दिया जाता है। साथ ही, पंचायत के बुजुर्ग लोग यापी से बिना पूछे यह फैसला ले लेते हैं। इस पर यापी का मन हुआ कि वह उस समाज को सब कुछ सुना डाले–जोर–जोर से चीख–चिल्लाकर उस पुरुष–प्रधान समाज के ठेकेदारों से यह पूछे कि उसका क्या कसूर है? क्यों उसी पर तमाम रीति–रिवाजों और परंपरागत नियम–नीतियों का हवाला थोप दिया गया है? यापी का मन उस समाज से चीख–चीखकर सवाल करता है कि "यह कैसा न्याय है? इतनी बड़ी सजा क्यों? मेरा कसूर क्या है? ऐसा कौन–सा जघन्य अपराध कर दिया है मैंने? आप लोगों ने कभी मेरी रज़ा जानने की भी कोशिश की? मुझसे कभी किसी ने पूछा कि मैं क्या चाहती हूँ? फैसला सुनाने से पहले एक बार भी मुझसे पूछ लिया होता, पर उसकी आवाज़ उसके गले में ही घुटकर रह गई, क्योंकि इस तरह की कबा देर/सभा में औरतों का इस तरह से बोलना एकदम वर्जित है और कबा के खिलाफ बोलना तो एकदम घोर अपराध माना जाता है।"[3]

'उस रात की सुबह' उपन्यास में स्त्री अस्मिता से संबंधित कई प्रश्नों को उठाते हुए, एक पशु और स्त्री की तुलना करते हुए, यापी के माध्यम से उपन्यासकार खुद से सवाल पूछते हैं कि नारी का मूल्य केवल दस मिथुन है? नारी की अपनी कोई पहचान नहीं है? जानवर और नारी में कोई अंतर नहीं है? यह सब पूछते हुए उपन्यासकार लिखते हैं कि "उफ्फ! दस सबअ/मिथुन, क्या स्त्री का मूल्य सिर्फ दस मिथुन ही होता है? क्या स्त्री का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता? क्या स्त्री और मिथुन में कोई अंतर नहीं होता?" 'उस रात की सुबह' उपन्यास में यापी और उसकी माँ को एक और बुजुर्ग महिला (आयो न्यिकाम) से पता चलता है की वह भी अपने जमाने से पुरुष–प्रधान समाज के अत्याचारों और दबावों को झेलती आई है। वह अपना दुख–दर्द बताते हुए कहती है कि जब उसके पति ने अपनी पसंद की दूसरी लड़की से विवाह कर लिया, तो वह उसी घर में अकेली विवाहित–कुवाँरी स्त्री बनकर रह गई। गाँव के बुजुर्ग लोग इस दशा को देखते हुए सलाह देते है कि तुम भी अपने पसंद के लड़के यानी अपने पति के भाइयों में से किसी एक को पसंद कर उसकी पत्नी बनकर बैठ जाओ। इस पर आयो न्यिकाम फौरन जवाब देते हुए

कहती है कि –"एक भाई ठुकराये और मैं दूसरे के साथ बैठ जाऊँ? हरगिज नहीं, मैं भी इंसान हूँ। मेरा भी कोई अस्तित्व है। कोई कपड़े का जोड़ा नहीं कि एक को पसंद नहीं आया तो दूसरे भाई ने पहन लिया।" आयो न्यिकाम की कहानी यह थी कि उस समय नेप्प न्यिदा की प्रथा चलती थी, इसलिए उसका विवाह भी नेप्प न्यिदा के अनुसार हुआ। नेप्प न्यिदा का अर्थ यहाँ यह बताया गया है कि जब बच्चे माँ के गर्भ में पल रहे होते हैं, तभी उनकी शादी तय कर दी जाती है। आयो न्यिकाम जब पैदा हुई, तब उसके पति का जन्म भी नहीं हुआ था। आयो न्यिकाम को उसके बाद चार साल तक इंतज़ार करना पड़ा। वह आगे कहानी बताते हुए कहती है कि उस जमाने में जबरदस्ती और बेमेल विवाह केवल नारियों के साथ ही नहीं होते थे, बल्कि पुरुषों के साथ भी होते थे। लेकिन पुरुष अपनी समस्या का समाधान निकाल लेते थे, वे अपनी पसंद की नारी से विवाह कर लेते थे। पहली पत्नी के घर में इंतजार करने के बावजूद भी पुरुष ऐसा करते थे, उन्हें समाज के कोई नियम–नीतियाँ नहीं रोक सकती थीं। यदि कोई नारी ऐसा करती, तो उसकी सजा मौत होती थी। आयो न्यिकाम की कहानी को सुनकर यापी की माँ, अपने मन ही मन सवाल करने लगती है।

वह 'उस रात की सुबह उपन्यास में कहती है कि "वाह रे! औरत तू तो सचमुच एक अनबूझ पहेली है। जिनके पति ने उन्हें जीवन भर तडपाया, बिना किसी अपराध के जिंदगी भर सजा भुगतने को मजबूर किया। उसके बजाय जिस सौत के साथ उसके पति ने अपना घर बसाया। उसके सारे वैवाहिक अधिकार छीनकर सौत को सौंपा और उसे यानी कि इन सबकी अधिकारणी को (आयो न्यिकाम) बेसहारा किया। उसे जीवन भर निःसंतान रहने और एकाकीपन में जीवन जीने को मजबूर किया आज उसी की बेटी को अपना सब कुछ सौंप देना चाहती है यह अनोखी औरत, आयो न्यिकाम। नारी तुम वास्तव में नारायणी हो! धन्य! ऐसे ही नारी–अस्मिता से जुड़े कई प्रसंग 'उस रात की सुबह' उपन्यास में भरे पड़े हैं। डॉ. तुम्बम रीबा जोमो की लिली', रचना चाहे 'काताम' कहानी हो या 'उस रात की सुबह, उपन्यास, इन सभी रचनाओं की स्त्री पात्र जीवन भर संघर्ष करते हुए नजर आती है। सुबह से लेकर शाम तक घरों में, खेतों में, हाथों से छाले छीलने तक कार्य करते हुए नज़र आती हैं, इन औरतों के हाथों में सजने–सवारने का रंग नहीं होता। "जंगली फूल' उपन्यास में भी स्त्री की यही दशा है कि–सिमांग, आसीन, रुंगिया, दोलियांग, याई और जीत आदि। उपन्यासकार ने 'साक्षी है पीपल' कहानी और 'जंगली फूल' उपन्यास में अधिकांशतः शोषित स्त्री की दशा को दिखाया है, जिसमें सिमांग और तापिक केवल खरीदी गई स्त्रियों के रूप में प्रस्तुत हैं। जब तानी गलती से सिमांग के स्थान पर आ जाता है और उसी वक्त दोनों को सिमांग का पति तापिक दिख जाते है, तो गलत समझते हुए तापिक सिमांग की बालों को बेदर्दी से पकडते हुए कहता है कि– "मेरी खरीदी हुई औरत, तेरी इतनी हिम्मत?"" इस 'जंगली फूल' उपन्यास में स्त्री या पत्नी का रूप केवल खरीदी हुए वस्तु के रूप में है। स्त्री का कोई सम्मान नहीं है, पत्नी की कोई इच्छा ही नहीं है। सदियों से तानी समाज में जो नारी किसी पुरुष के हाथों बिक चुकी होती है, उसके साथ जानवरों जैसा शोषण कर समाज में रखा जाता था। उन नारियों को किसी सुअर के समान समझते हुए सुअर की तरह ही घरों में बांध कर रखा जाता था। ऐसे हालत में कुछ नारी वहीं पर अपना दम तोड़ देतीं तो कुछ वहाँ से भाग निकल जातीं। ऐसा ही 'कन्या मूल्य' उपन्यास में गुम्बा नायिका के साथ होता है, उसे शहर से घसीट कर, घर ले जाया जाता है, जिस पर गुम्बा की माँ अपनी पति से पूछती है कि "तो मेरी बेटी गाय या सुअर है क्या जो वो लोग उसे ऐसे घसीट ले गये?" यह बात तो सच है की समाज में केवल पुरुष ही नारी पर शोषण नहीं करते आए है, बल्कि स्त्री खुद भी नारियों पर शोषण करती आई है, इन उपन्यासों में कभी माँ के रूप में बेटी को पति के लिए अपनी मनपसंद औरत अधिक से अधिक खरीदने की सलाह देते हुए नजर आते हैं, तो कभी सास के रूप में बेटे के पक्ष लेते हुए खरीदी हुई बहु पर 'पति को खाने वाली डायन' आदि के प्रहार करते हुए दिखाई देते हैं। कभी शौतन की पिटाई करने की बात भी करते हुए दिखाया गया है। ऐसा ही 'मेरी आवाज़ सुनो' उपन्यास में आयि नायिका की सास अपनी बहू को बाँझ और चुडैल कहती है। जब तक बहु सास के आदेश का पालन करती है, तब तक बहु की नाक ऊँची रखी जाती है और जब बहु सास के आदेश का पालन नहीं करती, तो उसे कभी डायन, बॉझ, चुड़ैल आदि बना दिया जाता है। आयि की सास कहती है कि "उसकी बड़ी बहन तो बाँझ थी, बाँझ।... बहू के घर में रहने से सारे कामों से मुझे थोड़ी फुरसत मिलेगी। लेकिन यह चुड़ैल और भी नई मुसीबत खड़ी कर देगी। नारी अस्मिता की प्रसंग को आवाज़ उठाते हुए 'कन्या मूल्य' उपन्यास की नायिका गुम्बा बताती है कि उस समय के समाज में पुरुष, स्त्रियों को अपना संपति समझते थे, और जब लड़की बच्चे जन्म देती थी तो सबसे ज्यादा पुरुष प्रधान समाज को खुशी मिलती थी। इसी बात को नायिका गुम्बा 'कन्या मूल्य ' उपन्यास में कहती है कि– "सचमुच मर्द लड़कियों को अपनी निर्जीव संपति मानता है" जब एक लड़की पैदा होती है तो वो खुश होते हैं जैसे नई संपति घर में आ गई हो। 10 नारी अस्मिता के प्रश्न– जुमसी जी का उपन्यास 'मेरी आवाज सुनो' में आयि पात्र की भाभी याजुम पात्र द्वारा नारी के अत्याचारो पर सवाल उठाते हुए सोचने लगती है कि क्यों स्त्री को पुरुष के इशारों पर चलना होता है?, वह अपनी ननद यायि की स्थिति को देखकर दया करती हुई, अपने पति से विरोध भी करती है, फिर भी उसका पति उसकी एक नहीं सुनता है। वह करे तो क्या करे इन समाजों का, जो स्त्री पर हर तरह का जुल्म करते आए हैं और स्त्रियाँ भी यू हीं जुल्म सहती आई हैं। जिस समाज में यायी और उसकी भाभी रहती थी, वहाँ की स्थिति को बदलना मुश्किल था, उस समाज में पुरुष ही सारी चीजों पर निर्णय लेते थे। वैसे में वे दोनों ही लाचार थीं। यायी की भाभी अपने आप से प्रश्न पूछते हुए कहती है कि क्या स्त्री को पुरुष की उँगलियों पर नाचना लिखा गया है? नारी के लिए शिक्षा भी नहीं, धन और दौलत भी नहीं, उसका अपना तन और मन भी नहीं ऐसा क्यों हैं? समाज ने ऐसा भेद भाव क्यों किया है। क्या नारी कोई मनुष्य नहीं है?, उसकी अपनी कोई पहचान नहीं है?, नारी की कोई स्वतन्त्रता भी नहीं होना चाहिए? क्या नारी समाज का हिस्सा भी नहीं है?, नारी की अपनी कोई इच्छा नहीं है, जब चाहे उसे बेच देता है यह पुरुष प्रधान समाज, स्त्री का कोई सम्मान और इज्जत ही नहीं हैं। छिः ऐसे समाज को, धिकार है ऐसे समाजों को आदि गलिया देते हुए यजुम कहती है कि "वह नारी है, नारी... जो मर्दों के इशारे पर चलती है। मर्दों की उँगलियों पर नाचना ही नारी के नसीब में लिखा है। औरतों के पैरों की बेड़ियाँ बहुत ही सख्त हैं। स्त्री के लिए धन–दौलत नहीं, शिक्षा–दीक्षा नहीं; यहाँ तक कि उसका तन और मन भी उसका अपना नहीं। क्या स्त्री की कोई स्वतन्त्रता नहीं होनी चाहिए? क्या नारी मनुष्य नहीं है? समाज का अंग नहीं है नारी? नारी ही तो इस पृथ्वी के प्राणियों की जन्मदायिनी है। लिंग भेद के कारण ही क्या पुरुषों को अपना या बेटियों को विक्रय करके मुनाफा कमाना चाहिए? छिः छिः! यह कैसी अमानवीय प्रथा है हमारे समाज में। लड़की का मूल्य उसके परिवार वालों को देकर लड़के वाले लड़की ले जाते हैं। लड़की की इच्छा का कोई अर्थ नहीं है। जो चाहे उसे पत्नी या बहू बना ले। न्यीजुम (याजुम) उन मर्दों को मन–ही–मन धिक्कारने लगी। पुरुष का यह विचार एक पागलपन ही है कि नारी को प्रकृति ने सिर्फ पुरुषों के लिए रचा है। समाज ने स्त्री को उपभोग योग्य सामग्री के सिवाय मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया। क्या स्त्रियों को पुरुष

जाति के समक्ष झुककर उनका मनमाना अत्याचार सहना चाहिए? स्त्री को विक्रय की जंजीर में बाँधा है क्या इसीलिए उसे हर अत्याचार हँसते–हँसते झेलना चाहिए?"[11]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखतें है कि इन सभी उपन्यासों में महिलाओं की स्थिति को अच्छा नहीं कहा जा सकता, दयनीय ही कहा जाएगा। जहाँ पुरुष प्रधान समाज ने उस पर अत्याचार किया है। यहाँ स्त्री को मात्र भोगविलास की एक वस्तु मान लिया गया है, उसका खुद का कोई अस्तित्व नहीं दिखाई पड़ता। हालाँकि कई बार वह विरोध करती हुई दिखाई पड़ती है संघर्ष भी करती है, लेकिन वह अपनी स्थिति नहीं बदल पाती।

संदर्भ सूची

1. डॉ. तुम्बम रीबा जोमो 'लिली', उस रात की सुबह, पृथ्वी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2018, पृ–24
2. वही, पृ–23
3. वही, पृ–19
4. वही, पृ–63
5. वही, पृ–69
6. वही, पृ–70
7. जोराम यालाम, जंगली फूल, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2019, पृ–62
8. लुम्मेर दाई, कन्या का मूल्य, एल.डी. पुब्लिकेशन, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, प्रथम संस्करण–2006, पृ–50
9. जुमसी सिराम 'नीनों, मेरी आवाज सुनो, अनुज्ञा बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्कारण–2021, पृ–46
10. लुम्मेर दाई, कन्या का मूल्य, एल.डी न.डी पुब्लिकेशन्स ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, प्रथम संस्कारण–2006, पृ–9
11. जुमसी सिराम 'नीनो', मेरी आवाज सुनो, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2021, पृ – 27